मोय तुमारी चर्या भा गई, तबइ करत अर्चा तोरी।
तीनईं बिरियाँ माला फेरत, रोज करत चर्चा तोरी॥
अर जौ मोरौ पगला मनवा, तुम खौं तज कैं नै जावै।
कहूँ रमैं नैं जो बंदरा सौ, उचक-उचक कैं इत आवै॥

कबउँ-कबउँ जो मोरइ बन कैं, खूबइ खूब नचत भैया।
सो सब हम खों कहें दिवानौ, और कैत का-का दैया॥
भौत बडे आसामी तुम तौ, तुम व्यापार करौ नगदी।
सौदा कौ नैं काम करौ तुम, नैं दुकान नैं है गद्दी॥

जग जाहिर मुस्कान तुमारी, तुम सी कला कहूँ नईंयाँ।
नैं कोऊ खों हामी भरते, नाहीं कँबऊँ करत नईंयाँ॥
मूड़ उठा कैं हेरत नईंयाँ, और कैत देखौ- देखौ।
चिटिया जीव-जन्तु दिख जावै, पै भक्तों खों नैं देखौ॥

महावीर कौ समोसरण तौ, राजगिरी पै खूब लगौ।
ऊँसइ बुन्देली में शौभै, संघ तुमारौ खूब बड़ौ॥
करी बड़ेबाबा की सेवा, सो बन गये छोटेबाबा।
काम करौ तुम बड़े - बड़े पै, काय कैत छोटे बाबा॥

कबउँ-कबउँ तौ तुम बोलत हौ, आगम कौ तब ध्यान रखौ।
समयसार खों खूबइ घोकौ, आतम रस खौं खूब चखौ॥

नौने-नौने ग्रन्थ रचा दये, भौत बनादय तीरथ हैं।
दुखियों की करुणा खों सुनकैं हाथ दया कौ फेरतहैं॥

ये की का का कथा कहें हम, कबउँ होय जा नैं पूरी।
भक्तों खों भगवान बना कैं, हरलई उनकी मजबूरी॥
इतनौ सब उपकार करत हौ, फिर भी कछू कैत नईंयाँ।
येई सें तौ जग जौ कैरव, तुम सौ कोऊ है नईंयाँ॥

अब किरपा ऐसी कर दइयो, पाँव-छाँव में मोय रखौ।
अपने घाँईं मोय बना लो, अपने से नैं दूर करौ॥
'सुव्रत' की जा अरज सुनीजै,और तनक सौ मुस्कादो।
भवसागर सैं मोरी नैया, झट्टईं-झट्टईं तिरवा दो॥

ॐ ह्रीं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा—गुण गावैं पूजा करैं, करैं भगति दिन रैन।
बस इत्तइ किरपा करौ, मोय देव सुख चैन॥
तुम तौ बड़े उदार हो, और गुणी धनवान।
पूजा जयमाला करी, मैं मौड़ा नादान॥
विद्यागुरु खों कैत सब, बुन्देली के नाथ।
सो बुन्देली गीत गा, तुमें झुकारय माथ॥(पुष्पांजलिं)

पुण्यार्जक : श्रीमान्

प्रकाशक : जैनोदय विद्या समूह

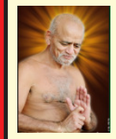

श्री विद्यागुरु बुन्देली पूजा

रचयिता—मुनि श्रीसुव्रतसागरजी महाराज

प्रस्तुति—बा. ब्र. संजय, मुरैना

स्थापना

(ज्ञानोदय छन्द)

मोरे गुरुवर विद्यासागर, सब जन पूजत हैं तुमखों।
हम सोई पूजन खों आये, तारो गुरु झट्टईं हमखों॥
मोरे हिरदे आन विराजो, हाथ जोड कैं टेरत हैं।
और बाठ जइ हेर रये हम, हँस कैं गुरु कब हेरत हैं॥मोरे ..॥

ॐ ह्रीं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्र! अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(पुष्पांजलिं)

बाप मतारी दोइ जनौं नैं, बेर-बेर जनमों मोखों।
बालापन गव आइ जुवानी, आव बुढापो फिर मोखों॥
नर्रा-नर्रा कैं हम मर गये, बात सुनैं नैं कोऊँ हमाई।
जीवौ मरबौ और बुढ़ापौ, मिटा देव मोरो दुखदाई॥

ॐ ह्रीं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मोरे भीतर आगी बर्रई, हम दिन रात बरत ओं में।
दुनियाँदारी की लपटों में, जूड़ापन नैं पाऔ मैं॥
मोय कबऊँ अपनौं नैं मारौ, कबऊँ पराये करत दुखी।
ऐंसी जा भव आग बुझादो, देव सबूरी करौ सुखी॥

ॐ ह्रीं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

कबऊँ बना दव मोखों बड्डौ, आगैं-आगैं कर मारौ।
कबऊँ बना कैं मोखों नन्नौ, भौतइ मोय दबा डारौ॥
अब तौ मोरौ जी उकता गओ, चमक-धमक की दुनियाँ में।
अपने घाँई मोय बना लो, काय फिरा रये दुनियाँ में॥

ॐ ह्रीं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अक्षय पद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

कामदेव तौ तुमसैं हारो, मोय कुलच्छी पिटवाबै।
सारौ जग तौ मोरे वश में, पर जौ मोखों हरवाबै॥
हाथ जोड़ कैं पाँव परै हम, गैल बता दो लड़बे की।
ये खौं जीतैं मार भगावैं, बह्मचर्य व्रत धरबे की॥

ॐ ह्रीं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

हम तौ भूखे नैं रै पावैं, लड्डुआ पेड़ा सब चाने।
लुचई ठडूला खींच औंरिया, तातौ वासौ सब खाने॥
इनसैं अब तौ भौत दुखी भये, देव मुक्ति इनसैं मोखों।
मोय पिला दो आतम-इमरत, नैवज से पूजत तोखों॥

ॐ ह्रीं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय क्षुधा-रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दुनियाँ कौ जो अँधयारौ तौ, मिटा लेत है हर कोऊ।
मोह रओ कजरारौ कारौ, मिटा सके नैं हर कोऊ॥
ज्ञान-जोत सैं ये करिया को, तुमने करिया मौं कर दव।
ऊँसईं जोत जगा दो मोरी, दीया जौ सुपरत कर दव॥

ॐ ह्रीं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

खूबइ होरी हमने बारी, मोरी काया राख करी।
पथरा सी छाती बारे जै, करम बरैं नैं राख भयी॥
तुम तौ खूबइ करौ तपस्या, ओइ ताप सैं करम बरैं।
मोय सिखा दो ऐंसे लच्छन, तुम सौ हम भी ध्यान धरैं॥

ॐ ह्रीं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम तौ कौनऊँ फल नइँ खाउत, पीउत कौनऊँ रस नँइयाँ।
फिर भी देखौ कैसे चमकत, तुम जैसो कोनऊँ नँइयाँ॥
हम फल खाकैं ऊबै नइयाँ, फिर भी चाने शिवफल खौं।
ओई सैं तौ चढ़ा रये हम, तुम चरणों में इन फल खौं॥

ॐ ह्रीं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

ऊँसईं-ऊँसईं अरघ चढ़ा कैं, मोरे दोनऊँ हाथ छिले।
ऊँसईं-ऊँसईं तीरथ करकैं , मोरे दोनऊँ पाँव छिले॥
नैं तो अनरघ हम बन पाये, नैं तीरथ सौ रूप बनौ।
येई सैं तौ तुमें पुकारें, दै दो आतम रूप घनौं॥

ॐ ह्रीं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(दोहा)

विद्यागुरु सौ कोऊ नैं, जग में दूजौ नाँव।
सबइ जने पूजत जिनैं, और परत हैं पाँव॥
दर्शन पूजन दूर है, इनकौ नाँव महान।
बड़भागी पूजा करैं, और बनावैं काम॥

(ज्ञानोदय छन्द लय - मेरी भावना)

मल्लप्पा जू के तुम मौड़ा, श्रीमति मैया के लल्ला।
गाँव आपनौ तज कैं देखौ,करौ धरम को तुम हल्ला॥
दया धरम कौ डण्डा लै कैं , फैरा रय तुम तौ झण्डा।
ऐसै तुम हौ ज्ञानी ध्यानी, फोरत पापों कौ भण्डा॥

एकईं बिरियाँ ठाडे हो कैं, खात लेत नैं हरयाई।
नौन मसालौ माल मलीदा, कबउँ खाव नैं गुरयाई॥
जड़कारै में कबऊँ नैं ओढ़ौ, तुम चारौ प्यॉर चिटाई।
जेठमास में गर्मी सैनें, पिऔ कबऊँ नैं ठण्डाई॥

तुम बैरागी हौं निरमोही, सच्ची मुच्ची में भज्जा।
बन कैं जिनवाणी के लल्ला, पूजौ जिनवाणी मज्जा॥
सब जग के तुम गुरुवर बन गये, ये में का कैसो अचरज।
गुरु के संगे मात-पिता के, गुरु बन गय जो है अचरज॥